सूरह आराफ – 7

ये सूरत मक्की है

Disclaimer:

Arshad Basheer madani ke urdu books ko Roman English mai lane wale ahbab Mubarakbadi ke mustahiq hai ke unoun ne asan kia urdu reading Na janne Waloun ke liye

الحمد لله

فجزاكم الله خيرا

Note : arshad basheer madani ne Word to Word check nahi kia Kiunke bohut books ko roman Kia gaya un sab ko Check karna asan nahi, time ka commitment deegar Urdu books Aur syllabus par laga huva hai is liye badi mazirat ke sat arz hai ke jahan kahin apko pronunciation ya talaffuz mai Diqqat lage Urdu Janne Waloun se asal Kitab ki taraf rujoo farmaen in sha Allaah in sha Allaaah

Askislampedia ki Team ka shukriya ke Roman mai book lane mai madad faramee

Khas tour se

Riaz bhai , shaikh abdullah Umeri, faheem iqbal , Mushtaq ahmed Aur baz sisters bhi hain jo madad kie Aur kuch brothers bhi madad kie Likin ijazat nahi hai ke unka naam zikr Kia jae Allaah qabool farmae sab ki mahant

****

Ameen

Shukriya

Shoba e nashro ishaat,

Askislampedia

बाज़ अहदाफ

- तमाम अम्बिया अलैहिमुस्सलाम का mission यही था के लोगों तक इस्लाम का पैघाम पहुंचाए और बस यही उनकी ज़िम्मेदारी थी ना के इस्लाम खबूल करवाने की, तो फिर अगर इस्लाम खबूल ना करे तो मायूसी किस बात की!!
- ये वो पहली सूरत है जिसमे बित तफसील अम्बिया के खिस्से बयान किये गए है| आदम अलैहिस्सलाम से लेकर आखिर तक| इसमें नूह, हूद, सालेह, शुऐब, मूसा अलैहिमुस्सलाम से लेकर मुहम्मद ﷺ तक तमाम अम्बिया का तज़किरह है|
- इस सूरत में हख व बातिल के दरमियान होने वाले दाइमी नज़ा की तस्वीर कशा की गयी है| और ये भी वाज़ेह किया गया के बातिल दुनिया में कैसे फसाद बरपा करते है|
- इस सूरत में बयान किया गया हर नबी का खिस्सा दो चीज़ों को ज़ाहिर करता है: 1- खैर और शर के दरमियान नज़ा और, 2- इब्लीस की चाल बाज़ियां जो बनी आदम के साथ कर रहा है, इसी लिए अल्लाह ने चार बार ये निदा दी (या बनी आदम), ताके इंसानों को इस दुश्मन से चौकन्ना करे, जिसने आदम को अल्लाह की मुखालिफत का वसवसा किया| 43

---

43 अज़वाउल बयान फी एज़ाहिल कुरआन बिल कुरआन 20/117

बाज़ मौज़ूआत

1. कुरआन अल्लाह की तरफ से हख है, इसकी इत्तेबा करना वाजिब है| (1-3)
2. दुनिया और आखिरत में ना फ़रमानी और झुठलाने वालों का अंजाम बताया गया| (4-9)
3. खियामत के दिन ज़मीन में खिलाफत का खिस्सा और इब्लीस का आदम अलैहिस्सलाम को सजदह करने से इनकार और आदम अलैहिस्सलाम को ज़मीन पर भेजे जाने का तज़किरह| (10-25)
4. बनी आदम से खिताब के वो अल्लाह के इनामात और उसके फ़ज़ल को याद करें और साथ ही शैतान के वसवसे से डराया गया| (26-27)
5. अखीदे में कुफ्फार की गुमराहियों का बयान और अल्लाह ने जो हराम किया है उसका बयान| (28-33)
6. हर शख्स की इन्तिहा मौत है| (34)
7. रसूलों की मुहीम और उन पर ईमान लाने वालों की जज़ा का बयान| (35)
8. काफिरों का रसूलों के साथ मुआमला और खियामत के दिन उनका अंजाम| (36-41)
9. खियामत के दिन मोमिनो के सवाब का बयान| (42-43)
10. जन्नत वाले जहन्नम वाले आराफ वालों का मुकलमा| (44-51)
11. नुज़ूल ए कुरआन के ज़रिये काफिरों पर इत्माम ए हुज्जत का बयान और खियामत के दिन काफिरों का एतेराफ| (52-53)
12. अल्लाह की खुदरत और उसकी वुसात ए रहमत के दलाइल| (54-56)
13. मोमिन और काफिर के लिए बास बादल मौत के दलायेल| (57-58)
14. नूह, हूद, सालेह, लूत और शुऐब अलैहिस्सलाम के खिस्सों का बयान| (59-93)

15. उम्मतों को हलाक करने से पहले अल्लाह की सुन्नत के अल्लाह उनको आज़माता है| (94-95)
16. कुफ्फार की तबियत का बयान और उनको तम्बीह| (96-102)
17. फिरौन के साथ मूसा अलैहिस्सल्लाम का खिस्सा और आले फिरौन का अंजाम| (96-145)
18. तकब्बुर करने वाले और झुटलाने वालों की सज़ा का ज़िकर| (146-147)
19. मूसा अलैहिस्सलाम की ग़ैर हाज़िरी में सामिरी का बनी इस्राईल को गुमराह करने का बयान| (148-154)
20. रसूल ﷺ की रिसालत तमाम आलमों के लिए है और तमाम खौमों को आप ﷺ की इत्तेबा करना वाजिब है| (157-158)
21. बाज़ बनी इस्राईल हख की इत्तेबा करते है और उन पर अल्लाह के इनामात का तज़किरह| (159-160)
22. बनी इस्राईल के वाखियात खुसूसन यौमुस सब्त का वाखिया| (161-171)
23. बनी आदम से लिए गए अहद का तज़किरह और उनकी फितरत का बयान| (172-174)
24. अस्मा ए हुसना के ज़रिये दुआ करने का बयान| (180)
25. हिदायत याफ्ता लोगों का तज़किरह| (181)
26. जो लोग अल्लाह की निशानियों में तफ़क्कुर और तदब्बुर नहीं करते और इनकार करते है वो गुमराह है| (182-186)
27. खियामत कब आने वाली है उसका इल्म सिर्फ अल्लाह ही को है| (187)
28. रसूल ﷺ इन्सान है, अपने लिए किसी नफ़ा व नुख्सान का इख्तियार नहीं रखते और न ही घैब का इल्म जानते है| (188)
29. मुशरिकीन की तबियत और उनके इफ्तेरा परदाज़ियों का बयान और उनकी तरदीद| (189-198)
30. अखलाख ए फ़ाज़िलह की तालीमात| (199-203)
31. जब कुरआन पढ़ा जाए तो खामोश रहने का तज़किरह| (204-205)
32. मोमिन की हखीखत| (206)

बाज़ अस्बाख

1. इस सूरत में इंसानियत की तीन सिफ़तों का ज़िकर है:1. मोमिन (इतातगुज़ार), 2. ना फरमान और 3. घाफिल|
2. इस सूरत में मूसा अलैहिस्सलाम, फिरौन और जादूगरों के खिस्से का ज़िकर है, जादूगर किस तरह से हख आशना होने पर मूसा अलैहिस्सलाम पर ईमान लाते है और फिरौन की धमकियों से ज़रा नहीं घबराते| 44
3. इस सूरत के आखिर में कहा गया घाफिल न होना और ज़िक्र में लगे रहना|
4. इस सूरत में बनी इस्राईल की तीन जमातों का ज़िकर है: नाफरमान, मोमिन (जो बुराइयों से रोकते थे) और तमाशाई| 45. ये तीन group हर मुआशरे में पाए जाते है| तमाशाई कहते: (----------) उनके जवाब में मोमिन ये कहते: (----------) (अल आराफ:164)

5. ये कुरआन अल्लाह ताला ने मुहम्मद ﷺ पर लोगों की हिदायत के लिए उतारा है, इस किताब का एक बड़ा मख्सद ये है के ये जाहिली रुसूम की इस्लाह करता है और मुआशरे को एक सही मन्हज पर लाता है|
6. कुरआन के दो अहम् मखासिद है:
    - इन्ज़ार: लोगों को अल्लाह के अज़ाब से खुले तौर पर डराना|
    - नसीहत: अहले ईमान को नसीहत करना|
7. ये कुरआन जिस तरह रसूल ﷺ को डराने की ज़िम्मेदारी देता है, इसी तरह अहले ईमान को उस पर अमल करने और उसकी इत्तेबा करने की तालीम देता है|
8. जो कुरआन को छोड़ कर किसी और किताब की हिदायत खबूल करे तो ये सरीह कुफ्र है| इसी तरह जो अल्लाह की किताब को काफी न समझ कर किसी दूसरी किताब की इत्तेबा करे तो ये भी शिर्क है|
9. अल्लाह ताला ने बहुत से खौमों को हलाक किया और अज़ाब का मज़ा चकाया, उस वख्त जबके वो आराम कर रहे थे या घफ्लत में थे| और ये घाफिल जब अज़ाब को देख लेते तो फ़ौरन अपने कुफ्र का एतेराफ करने लगते, लेकिन ऐसा करना उनको कुछ भी फाइदा न देता|
10. झुठलाने वालों को जो अज़ाब आता है वही सब कुछ नहीं होता बलके आखिरत में और भी बहुत शदीद सख्त अज़ाब होगा|
11. खियामत के रोज़ जब तमाम अख्वाल और रसूल जमा होंगे उस वख्त कुफ्फार व मुशरिकीन को ज़िल्लत उठानी पड़ेगी|
12. खियामत के दिन बन्दों के आमाल मीज़ान ए हख में तोले जायेंगे, जिसमे बारीक से बारीक चीज़ को भी वज़न किया जाएगा|
13. खियामत के रोज़ लोग दो ग्रोहों में होंगे, एक वो जिनके तराज़ू ईमान और अमल ए सालेह से भरी होंगे, और दूसरे वो जिनके मीज़ान कुफ्र व गुमराही की वजह से हलके होंगे|
14. (----------) शैतान ने दोबारा उठाये जाने वाले दिन तक मुहल्लत मांगी|
15. ज़मीन इंसानों के लिए रहने की जगह और ज़िन्दगी गुज़ारने का ज़रिया बनी, जिसमे वो पैदा होंगे, इससे फाइदा उठाएंगे, इसी में मरेंगे, और इसी से दोबारा उठाये जायेंगे| जिसमे वाज़ेह इशारा है के दुनिया से दिल नहीं लगाना चाहिए|
16. शैतान की दुश्मनी इन्सान की पैदाइश से चली आ रही है, वो लोगों को गुमराह करने के लिए वसवसा डालता है, और उन्हें कुफ्र व ज़लाल से दो चार करता है| वो खुला दुश्मन है, जिसकी दुश्मनी छुपी हुई नहीं है| लिहाज़ा हर मुसलमान को चाहिए के वो इससे आगाह रहे|
17. लिबास एक बड़ी नेमत है, जिसमे बहुत से फवायेद है, जैसे शर्म गाह की परदा पोशी, सर्दी व गर्मी से बचाव, ज़ेब व ज़ीनत वघैरह| जबके शैतान और उसके आवान शर्म गाहों के खोलने और बरहना करने की दावत देते है, ताके फहश का इर्तेकाब हो|
18. लिबास इन्सान के ज़ाहिर को छुपाता है, लेकिन बातिन को भी लिबास की ज़रुरत है और वो तख्वा का लिबास है, बंदा हमेशा अल्लाह को याद करता रहे, उसकी इतात पर हरीस हो, और उसकी मुखालिफत से दूर भागे|

19. शैतान ने बहुत सारे लोगों को गुमराह कर दिया, उनके लिए शिर्क व बुत परस्ती और फवाहिश व मुन्करात मुज़य्यिन कर दिए, जैसे लड़कियों को ज़िन्दा दफ़न करना, ना हख खतल करना और बरहना तवाफ करना वघैरह| लिहाज़ा इस्तेआज़ा करते रहना चाहिए|
20. मुशरिकीन जब भी कोई बुराई करते तो दो तौजियह करते, एक ये के उन्होंने अपने बाप दादा को ऐसा करते हुए पाया, दूसरा ये के अल्लाह ने उन्हें ऐसा करने का हुकुम दिया है, जबके दोनों उज़्र बातिल और खबीह है और अल्लाह बुराई का हुकुम नहीं देता|
21. अल्लाह सिर्फ अदल व इन्साफ का हुकुम देता है और इन्साफ की तरफ बुलाता है|
22. अल्लाह ताला ने मसाजिद की तरफ आने वालों की ज़ेब व ज़ीनत इख्तियार करने का हुकुम दिया है|
23. खूबसूरत और महेंगे पोशाक व लिबास से मुमानियत नहीं, बशर्त ये के वो हराम न हो, फुज़ूल खर्ची न हो, तकब्बुर न हो और शरई मुमानियत न हो|
24. अल्लाह ने ज़ीनत के इख्तियार करने को मना नहीं किया और न ही पाकीज़ह रिज्ख को हराम किया है| लेकिन हर फहश बात को हराम किया है, चाहे वो ज़ाहेरी हो के बातिनी|
25. हर उम्मत का एक मुखर्रर वख्त है, जिस पर वो हलाक होती है| अल्लाह ही ने अपने वसी और मुहीत इल्म से ये औखात मुखर्रर किये है और हर उम्मत इस तक पहुँच कर रहेगी| और वो वख्त आने पर न ही ताखीर होगी और न ही जल्द बाज़ी की जायेगी|
26. हर एक की मौत मुखर्रर है, चाहे वो खतल से हो या अचानक हो| बहरहाल वो अपने वख्त पर मरा है|
27. अल्लाह की रहमत है के उसने इंसानों को बघैर हिदायत के नहीं छोड़ा, बलके उनमे रसूल भेजे, ताके वो उन्हें आगाह करें और उनकी रहनुमाई करें, इस तरह जो गुनाहों से बचा और रसूल की बात माना उसके लिए कोई ग़म और खौफ न होगा, लेकिन जो झुठलाये वो जहन्नम में जाएगा|

28. कमज़ोर अपने सरदारों और बड़ों की शिकायत करेंगे के, ऐ हमारे रब, उन्होंने हमको गुमराह किया|
29. अल्लाह ने हर झुठलाने वाले से वादा किया है के उनके लिए आसमानों के दरवाज़े नहीं खोले जायेंगे, न उनकी रूह के लिए और न ही उनकी दुआओं के लिए और न ही उनके आमाल के लिए, सब के सब रद्द कर दिए जायेंगे और वो जहन्नम में जायेंगे|
30. अल्लाह अहले ईमान के सीनों को जन्नत में जाने से पहले कीना से पाक कर देगा, जिसमे इशारा है के वो सीने को साफ़ रखें, धोका और हसद से पाक रहें|
31. खियामत के दिन सबके आमाल का हिसाब लिया जाएगा, अहले जहन्नम अपनी अलामतों से पहचाने जायेंगे और अहले जन्नत अपनी अलामतों से जाने जायेंगे और उन दोनों के दरमियान हिजाब होगा|
32. जो लोग दुनियावी माल व मता और इफ्रादी ए खुव्वत से धोके में है वो जान ले के आखिरत में ये कुछ फाइदा न देगा|
33. जहन्नमियों की कोई आरज़ू पूरी नहीं होगी|
34. अल्लाह ने किताब को हख के साथ उतारा, इसकी वाज़ेह और तफसील के साथ उतारा और इसको मोमिनों के लिए हिदायत व रहमत और शिफा बनाया|

35. अल्लाह ताला आसमानों और ज़मीन को एक लम्हे में पैदा कर सकता है, लेकिन उसने इनको छह (6) दिनो में पैदा किया, ताके बन्दों को इल्म हो के वो मुआमलात में नरमी और महुल्लत से काम लेता है और ये के उसके पास हर चीज़ का वख्त मुखर्रर है|
36. अल्लाह अर्श पर मुस्तवी है, जिस तरह उसकी शान व अज़मत के लायख है, वो मख्लूख की मुशाबिहत से पाक है|
37. अल्लाह ने बन्दों को दुआ करने का हुकुम दिया, दुआ करने वाला खौफ व गिरया विज़ारी और ज़िल्लत व खुशू इख्तियार करें|
38. दुआ के आदाब में से ये भी है के वो दुआ में हद से आगे न बढे, जैसा हमेशा दुनिया में रहने की दुआ करे या ऐसी बात का सवाल करे जो महाल हो या मनाज़िल का सवाल करे या चीख चीख कर दुआ करें|
39. नरमी, खौफ और उम्मीद के साथ दुआ करे और इसमें जल्द बाज़ी न करे|
40. हर खिसम के फसाद मचाने से रोका गया है| अल्लाह के साथ कुफ्र और मासियत का इरतेकाब भी फसाद है|
41. अच्छी ज़मीन अल्लाह के हुकुम से अच्छी फसल उगाती है और खराब ज़मीन सिवाए घास फूस के कुछ नहीं उगाती, दिलों की यही मिसाल है|
42. दुआत को चाहिए के वो सब्र, बुर्दबारी, चुस्ती से दावत व तब्लीघ करे और लोगों से हिकमत के साथ बर्ताव करें|
43. खौम ए समूद खुव्वत, कुशादगी, कसरत ए माल व जाह से सरकशी और फसाद पर अड़ गए थे|
44. खौम ने सरकशी में ऊंटनी को काट दिया, जिसकी वजह से इन सब को अज़ाब ने आ पकड़ा, ये काम तकब्बुर और सरकशी की वाज़ेह अलामत थी|
45. खौम नाप तोल में कमी करती थी और बातिल तरीखे से लोगों का माल लूटति थी, इसलिए शुऐब अलैहिस्सलाम उनके कसब व माश की इस्लाह की दावत देते थे|
46. अल्लाह पर इफ्तेरा की बजाये ईमान लाने और कुफ्र से बचने में काहिर और नेमत है|
47. जब कभी कोई रसूल आता है तो खौम को महूलत दी जाती है और मुख्तलिफ आज़माइशों से गुज़ारा जाता है, ताके लोग ईमान ले आयें|
48. जब खौम ये गुमान कर ले के ये सख्तियाँ तो उनके बाप दादा पर भी आती थी और वो रसूल की बात मानने से इनकार कर दे तो उनकी हलाकत यखीनी हो जाती है|
49. अल्लाह लोगों को नेमतें देकर आहिस्ता आहिस्ता जकड़ता है, वो अपनी तिजारत, माल व दौलत और आल व औलाद से खुश हो जाते है और फिर अचानक सब कुछ हलाक हो जाता है|
50. माल व दौलत की कसरत से खुशगवार ज़िन्दगी नहीं मिल सकती, बलके ये तो ईमान व तख्वे से मिलती है|
51. इन तमाम अम्बिया के खिस्सों से मुहम्मद ﷺ को तसल्ली दी गयी, जिस से कुरआनी वाखियात की अहमियत वाज़ेह होती है|
52. अहले कुफ्र कभी भी एक अहद पर पाबन्द नहीं रहते और न उसकी हिफाज़त करते है, बलके हमेशा अहद व पैमान तोड़ते है और इस तरह उन्हें अज़ाब में जकड लिया जाता है|

53. पूरी इंसानी तारीख में सबसे बड़ी आज़माइशों में से एक आज़माइश मूसा अलैहिस्सलाम को थी क्यों के आपका सामना फिरौन से था जो अपने आप को रब होने का दावा करता था|
54. हमेशा से सरकशों का एक मन्हज रहा है के वो अम्बिया और दुआत और अहले ईमान पर तोहमत बांधते है, ताके हाज़रीन को चुप कर दें|
55. जब हाकिम का बातिन ना पाक हो जाएँ और उसकी इस्लाह ना मुमकिन हो जाए और ऐसे में वो किसी इस्लाह की फिकर करे तो उसका बातिन उसकी इजाज़त नहीं देता और बातिल मुज़य्यिन हो कर सामने आता है और वो अपनी गुमराही पर अड़ जाता है|
56. शदाइद और आज़माइशों से निमटने के लिए अल्लाह से मदद तलब करना और मुसीबतों पर सब्र करना चाहिए|
57. अल्लाह की सुन्नत है के वो मुकज्ज़िबीन को सख्तियों से भी और नेमतें देकर भी आज़माता है|
58. खौम ए फिरौन को अगर भलाई पहुँचती तो कहते के हम इसी के हखदार है, और अगर कोई बुराई पहुँचती तो कहते के ये तो मूसा अलैहिस्सलाम की नहूसत है|
59. (----------) अल्लाह का वादा सच्चा है और उसका वख्त मुखर्रर है, वो अपने वादे से पीछे नहीं हटता, जिस तरह के उसने फिरौन को वख्त ए मुखर्रर पर हलाक किया|
60. इस्तेख्लाफ की अहमियत वाज़ेह होती है के खौम को बग़ैर किसी निगरान के हरगिज़ न छोड़ा जाए, यही काम नबी ﷺ जब सफ़र या जिहाद पर जाते तो करते थे|
61. अल्लाह की हिकमत है के उसने अपनी रुइयत को अहले ईमान के लिए आखिरत में रखी है|
62. अम्बिया की तौबा गुनाह की वजह से नहीं बलके अल्लाह की खुर्बत में ज्यादती की ख्वाहिश से होती है|
63. अल्लाह जिसे चाहता है चुन लेता है और दर्जात बुलंद करता है| अल्लाह ने मूसा अलैहिस्सलाम को चुना और कलाम किया|
64. मूसा अलैहिस्सलाम अपने रब के लिए गुस्सा हुए थे, खौम की उस हरकत पर जो उन्होंने की, वो अपने लिए कभी गुस्सा नहीं हुए|
65. ख़ास व आम के लिए वाज़ेह है|
66. मुहम्मद ﷺ की रिसालत तमाम के लिए है|
67. अल्लाह के हुदूद में सरकशी और दीन की मुहर्रिमात में इनहमाक, अल्लाह की पकड़ और अज़ाब आने का सबब है|
68. अम्र बिल मारूफ व नहीं अनिल मुनकर की खास अहमियत है, जिसके ज़रिये मुआशरे को अल्लाह के ग़ज़ब और हलाकत से बचाया जा सकता है|
69. अल्लाह ने बनी आदम से अहद लिया के वो सिर्फ उसकी इबादत करेंगे और इबादत में किसी और को शरीक नहीं करेंगे और ये वो फितरत है जिस पर अल्लाह ने उन्हें पैदा किया है|
70. अल्लाह ने जिन्नात और इंसानों की अक्सरियत को आग के लिए पैदा किया है, लेकिन उन्हें इस राह पर मजबूर नहीं किया गया, वो खुद अपने ज़िम्मेदार है के इन्होने ऐसा रास्ता चुन लिया|
71. अल्लाह के अच्छे नाम है, लिहाज़ा हर मुसलमान पर ज़रूरी है के वो अल्लाह को उन नामों से पुकारे|
72. रसूल ﷺ घैब नहीं जानते और न ये जानते है के खियामत कब आएगी, बलके इस इल्म को अल्लाह की तरफ फेर देते है|

73. अगर कोई घैब जानता तो खैर ही खैर हासिल करता, और शर से बचने की कोशिश करता लेकिन अल्लाह की हिकमत है के वो घैब से किसी को आगाह नहीं करता|
74. ये अल्लाह की अज़मत खुदरत है के पूरी इंसानियत को एक मर्द व औरत से पैदा किया और उनमे तनस्सुल जारी किया|
75. विलादत के खरीब हर मर्द व औरत ये तमन्ना करते है के नौ मौलूद हर एतेबार से अच्छा हो और जब देखते है के वो बा ऐब है तो अल्लाह को भूल जाते है|
76. अल्लाह हर मोमिन और सालेह का दोस्त है|
77. मुसलमानों को चाहिए के वो कुरआन की ताज़ीम करें और खुशू, तदब्बुर व हुज़ूर ए खल्ब से सुने ताके उन पर रहम किया जाए|

---

44 (आयत:124-126)

45 (मज़ीद तफसील के लिए तफसीर ए तबरी देखिये)

मुनासिबत / लतैफुत तफसीर

- अनाम और आराफ मक्की सूरतें है, जिसमे खुरैश के शुबहात व एतेराज़ात का रद्द है| अनाम में इत्माम ए हुज्जत है और आराफ में इन्ज़ार|
- सूरह अनाम में सवाल व जवाब व मुआदला अहसन, जबके सूरह आराफ में तारीखी मिसालों से इन्ज़ार का तरीखा अपनाया गया|
- इस सूरत का नाम आराफ इसलिए है क्यों के इसमें लफ्ज़ ए आराफ आया है, जो एक दीवार है, जन्नत और जहन्नम के दरमियान| यहाँ वो लोग होंगे जिनकी नेकियाँ और बुराइयाँ बराबर होंगी| उनकी बुराइयाँ उन्हें जन्नत में जाने से रोकेंगी और उनकी नेकियाँ उन्हें जहन्नम में जाने से रोकेंगी| इसी लिए वो इस दीवार पर रहेंगे, यहाँ तक के उनके दरमियान अल्लाह फैसला फरमा दे|
  46 मज़ीद तफसील के लिए तफसीर ए तबरी देखिये- p:190

  हिफ्ज़ व तदब्बुर आयात व हदीस बराये तज़कीर, तज़किया, दावत और इस्लाह

  आयत 1: खाल ताला: (----------) (अल आराफ:179)
  तरजुमा: और हमने ऐसे बहुत से जिन्न और इन्स दोज़ख के लिए पैदा किये है| जिनके दिल ऐसे है, जिनसे नहीं समझते और जिनकी आँखें ऐसी है, जिनसे नहीं देखते और जिनके कान ऐसे है, जिनसे नहीं सुनते| ये लोग चौपायों की तरह है, बलके ये उनसे भी ज़्यादा गुमराह है| यही लोग घाफिल है|

  आयत 2: खाल ताला: (----------) (अल आराफ:205)

तरजुमा: और ऐ शख्स! अपने रब की याद किया कर, अपने दिल में आजिज़ी के साथ और खौफ के साथ और ज़ोर की आवाज़ की निस्बत कम आवाज़ के साथ, सुबह और शाम और अहले घफ्लत में मत होना|

हदीस: (----------) (सहीह बुखारी:6407)
तरजुमा: अबू मूसा अशअरी रज़िअल्लाहुअन्हु कहते है, के रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जो शख्स अपने रब को याद करता है, और जो नहीं करता है, उनकी मिसाल ज़िन्दा और मुरदा की सी है|